3
लेखांकन संकल्पनाएं
(Accounting Concepts)

3.1 भूमिका

पिछले पाठ में आपने लेखाकंन मान्यताओं जैसे व्यवसाय के (पृथक्) अस्तित्व, मुद्रा मापन, चालू व्यापार आदि के बारे में पढ़ा है। इन मान्यताओं के अतिरिक्त, लेखाकंन में कुछ मुख्य संकल्पनाएं भी हैं। लेखा बहियों में लेन-देनों का लेखा करने वाले सभी व्यक्तियों द्वारा इन संकल्पनाओं को माना जाता हैं तथा इनका अनुसरण किया जाता हैं। इन संकल्पनाओं का विकास कई वर्षों में हुआ हैं। आप इस पाठ में कुछ महत्त्वपूर्ण संकल्पनाओं का विस्तृत अध्ययन करेगें।

3.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप :

- लेखाकंन संकल्पनाओं का अर्थ बता सकेगें;
- चार लेखाकंन संकल्पनाओं अर्थात् अनुरूपता, उपार्जन, आय वसूली तथा द्वि-पहलू की गणना कर सकेगें;
- आगम और व्यय का अर्थ उदाहरण सहित बता सकेगें;
- व्यवसाय के आगम और व्यय के उदाहरण दे सकेगें;
- एक दी हुई स्थिति में एक निश्चित अवधि के व्ययों की आगमों से तुलना कर सकेगें;
- अनुरूपता संकल्पना के अर्थ व महत्त्व का अनुमान लगा सकेगें;
- उपार्जन संकल्पना का अर्थ बता सकेगें;
- लेखाकंन अवधि में घटित उन खर्चों के उदाहरण दे सकेगें जिनका उस अवधि के अन्त तक भुगतान नहीं किया गया हो;

- लेखाकंन अवधि के अन्त तक अप्राप्त बकाया आय के उदाहरण दे सकेगें;
- यह निष्कर्ष निकाल सकेगें कि आगम पूँजी में वृद्धि करते है और व्यय इसमें कमी करते हैं।
- उपार्जन संकल्पना के महत्त्व का अनुमान लगा सकेगें;
- आय वसूली संकल्पना का अर्थ तथा महत्त्व बता सकेगें;
- प्रत्येक लेन-देन के दो पक्षों को पहचान सकेगें;
- निष्कर्ष निकाल सकेगें कि सम्पत्तियाँ देयताओं के बराबर होती हैं;
- द्वि-पहलू संकल्पना के अर्थ व महत्त्व की व्याख्या कर सकेगें।

3.3 लेखांकन संकल्पनाएं

लेखाकंन संकल्पनाओं का अर्थ सीखने से पहले निम्नलिखित उदाहरण की जाँच करते हैं:

लेन-देन : अतुल ने 10,000 रू. का नकद तथा 20,000रू. का उधार माल बेचा। उपरोक्त लेन-देन का लेखा निम्नलिखित दो प्रकार से किया जा सकता हैं।

I. विक्रय का लेखा केवल 10,000 रू. का किया जा सकता हैं क्योकि यह रकम रोकड़ में प्राप्त हुई हैं।

II. विक्रय का लेखा 30,000 रू. का किया जा सकता हैं (10,000रू. नकद विक्रय + 20,000 रू. उधार विक्रय)।

कौन सा सही है और क्यों? लेन-देन का लेखा दूसरी प्रकार से करना सही हैं क्योकि यह लेखाकंन संकल्पना (नियम) के आधार पर किया जाता हैं। इस लेखन में जिस संकल्प्ना का अनुसरण किया गया हैं वह उपार्जन संकल्पना के नाम से जानी जाती हैं।

आईये अब हम लेखाकंन संकल्पना शब्द का अर्थ समझें। लेखाकंन संकल्पनाएँ सार्वभौमिक मान्य नियम हैं जो लेन-देनों के वास्तविक लेखन का उचित पथ प्रदर्शन करते हैं। ये संकल्पनाएँ अभिलेखित लेन-देनों को समझने में मदद करती हैं। ये व्यवसाय के लाभों पर लेन-देनों के प्रभाव के निर्धारण में सहायता करती है। लेखाकंन मान्यताओं की तरह ही इनका विकास भी वर्षों में अनुभवों से हुआ हैं।

चार मुख्य लेखाकंन संकल्पनाएँ हैं-

(i) अनुरूपता संकल्प्ना (Matching Concept)

(ii) उपार्जन संकल्पना (Accrual Concept)

(iii) आय वसूली की संकल्पना (Realisation Concept)

(iv) द्वि-पहलू संकल्पना (Dual Aspect Concept)

हम इन लेखाकंन संकल्पनाओं का विस्तृत अध्ययन इस पाठ में करेगें

अनुरूपता संकल्पना (Matching Concept)

आईये हम निम्नलिखित उदाहरण की जाँच करें:

एक व्यवसायकर्ता ने लेखा वर्ष के अन्त में अर्थात् 31 मार्च 1996 को एक सूती कमीज 150 रू. (लागत 130 रू.) की बेची। 31 मार्च 1996 को उसे 100 रू. की रकम प्राप्त हुई तथा शेष रकम 15 अप्रैल 1996 को। अब इस स्थिति में 31 मार्च 1996 को लाभ या हानि ज्ञात कीजिए।

आप कह सकते हैं कि उसे 30 रू. की हानि उठानी पड़ी क्योकि 130 रू. की लागत में से बिक्री पर 100 रू. की रकम प्राप्त हुई।

आप यह भी कह सकते हैं कि उसने 20 रू. का लाभ कमाया अर्थात् 150 रू. की बिक्री घटा 130 रू. की लागत।

अब कौन सा उत्तर सही हैं और क्यों?

दूसरा उत्तर अर्थात् 20 रू. का लाभ सही हैं क्योंकि इस स्थिति में हम सही लाभ को केवल अनुरूपता संकल्पना को लागू करके ही ज्ञात कर सकते हैं। आईये अनुरूपता संकल्पना को समझने के लिए हम कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों को सीखें।

आगम (Revenue) : सम्पत्तियों का अन्तः प्रवाह जैसे रोकड़ तथा ग्राहकों से प्राप्यों (रोकड़ प्राप्ति के अधिकार) आगम हैं। आगम का सम्बन्ध मुख्य रूप से माल के विक्रय तथा सेवाओं की पूर्ति से हैं। माल को बेचने पर, या तो तत्काल रोकड़ प्राप्त होता है या विक्रयकर्त्ता को भविष्य में क्रेता से रोकड़ प्राप्ति का अधिकार प्राप्त होता हैं। अर्थात् विक्रय द्वारा रोकड़ के रूप में या प्राप्यों के रूप में सम्पत्ति प्राप्त होती हैं। यह आगम कहलाता हैं। आईये हम आगम के कुछ उदाहरण देखें :

(i) एक फर्म ने 20,000 रू. का माल बेचा, फर्म के आगम 20,000 रू. हैं।

(ii) एक फर्म ने 50,000 रू. का उधार माल बेचा, फर्म के आगम 50,000 रू. हैं।

(iii) एक व्यावसायकर्ता एक भवन का स्वामी हैं। भवन के एक भाग से प्रति माह 1,200 रू. किराया प्राप्त होता हैं। अतः व्यवसायकर्ता 1,200 रू. किराये द्वारा आगम प्राप्त करता हैं।

(iv) बैंक ने एक फर्म को 1996 की जमाओं (Deposits) पर 600 रू. ब्याज दिया। यह फर्म के लिए 1996 के आगम हैं।

(v) आप अंकुर इलैक्टॉनिक के एंजेट है। आप इस फर्म का माल बेचते हैं। अंकुर इलैक्ट्रॉनिक ने आपको 2,000 रू. कमीशन दिया। आपको जो कमीशन प्राप्त हुआ वह आपके लिए आगम हैं।

उपरोक्त उदाहरणों में आपने आगम के विभिन्न स्रोतों जैसे माल का नकद या उधार विक्रय, किराया, कमीशन और ब्याज आदि देखें हैं।

सलविन तथा रेनोल्ड ने आगम को निम्न शब्दों में परिभाषित किया हैं:

"आगम शब्द सम्पत्तियों के अन्तः प्रवाह के स्रोतों को बताते हैं जिन्हें सेवाएँ प्रदान करके, उत्पाद या स्टॉक बेचने, विक्रय या सम्पत्तियों (व्यापार में स्टॉक को छोड़कर) के विनिमय पर लाभों तथा ब्याज और निवेश पर लांभाश आयों के बदले प्राप्त किया जाता है।"

व्यय (Expense) :

एक निश्चित अवधि में आगम सृजन के उद्देश्य हेतु रोकड़ तथा व्यय के निम्नलिखित कुछ उदाहरण हैं।

(i) एक विक्रयकर्त्ता को प्रति माह 2,5000 रू. का वेतन दिया जाता है। यह रोकड़ का बाह्यप्रवाह है अतः फर्म का एक व्यय हैं।

(ii) एक फर्म डाक-टिकटों के लिए 500 रू. देती हैं। यह रोकड़ का बाह्यप्रवाह हैं और फर्म का एक व्यय है।

(iii) एक फर्म अपने व्यवसाय के भवन का 1,000 रू. किराया देती हैं। यह व्यवसाय का एक व्यय हैं क्योंकि इसमें रोकड़ का बाह्यप्रवाह हैं।

(iv) एक फर्म ने 1 जनवरी 1996 को 50,000 रू. की मशीनरी खरीदी। मशीन की अनुमानित आयु 10 वर्ष हैं। वर्ष के अन्त अर्थात् 31 दिस. 1996 तक 5,000 रू. की मशीन का उपयोग किया गया (50,000/10) मशीन का उपयोग एक व्यय है। इस उपयोग को **ह्रास** कहते हैं।

(v) रमन माल की उठवाई के 200 रू. देता है। यह रोकड़ का बाह्यप्रवाह है और इसलिए उसके लिए एक व्यय है।

आईये हम एक व्यवसाय के 31 दिसम्बर 1996 को पूरे हुए वर्ष के दौरान लेन-देनों का अध्ययन करें।

(i) Sales : Cash Rs.20,000 and Credit Rs.10,000.

(ii) Salaries paid Rs.3,500

(iii) Commission paid Rs. 500

(iv) Interest received Rs. 500

(v) Rent received Rs.1,400 out of which Rs.400 received for the year 1997.

(vi) Carriage paid Rs.200

(vii) Postage & Stationery Rs.300

(viii) Rent paid Rs.2,000, out of which Rs.500 belongs to the year 1995.

(ix) Goods purchased in the year for cash Rs.15,000 and on credit Rs.5,000

(x) Depreciation on Machinery Rs.2,000

आईये हम उपरोक्त लेन-देनों को व्यय तथा आगम शीर्षकों में विभक्त करें :

Expenses		(Rs.)	Revenue		(Rs.)
1. Salaries		3,500	1. Sales		
2. Commission		500	Cash	20,000	
3. Carriage		200	Credit	10,000	
					30,000
4. Postage & Stationery		300	2. Interest Received		500
5. Rent paid	2,000		3. Rent Received	1,400	
Less for 1995	500		Less for 1997	400	
		1,500			1,000
6. Goods Purchased					
Cash	15,000				
Credit	5,000				
		20,000			
7. Depreciation		2,000			
Total		28,000	Total		31,500

उपरोक्त उदाहरण में व्ययों को आगमों से मिलाया गया है (आगम 31,500 रू. घटा व्यय 28,000 रू.)। इस तुलना के परिणामस्वरूप 3,5000 रू. की आय हुई है। यदि आगम, व्ययों

से अधिक हो तो यह लाभ या आय कहलाता है। यदि व्यय, आगम से अधिक हों तो यह हानि कहलाती है। ठीक इसी प्रकार अनुरूपता संकल्पना में किया जाता है।

अर्थ तथा महत्त्व

अनुरूपता संकल्पना में हम एक निश्चित अवधि सामान्यतया एक वर्ष के व्ययों का आगमों से मिलान करते हैं ताकि उस अवधि के लाभ या हानि का निर्धारण किया जा सके। यदि आगम, व्ययों से अधिक होते हैं तो यह लाभ या आय कहलाती हैं और व्ययों के आगमों से अधिक होने की स्थिति में यह हानि बन जाती है। यह तुलना सामान्यतया एक निश्चित अवधि अर्थात् एक वर्ष (पिछले पाठ में आपने समयावधि की मान्यता में पढ़ा है) में की जाती है। इसका महत्त्व यह है कि यह एक निश्चित अवधि के सही लाभ या हानि के अनुमान में व्ययों की आगमों से तुलना का मार्ग दर्शन करता है।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरिये :

   (i) एक अवधि के दौरान अर्जित __________ के साथ व्ययों का मिलान किया जाता है।

   (ii) आगम __________ जैसे रोकड़ और प्राप्यों का अन्तःप्रवाह है।

   (iii) रोकड़ पर माल का विक्रय __________ का एक उदाहरण है।

   (iv) वेतन भुगतान __________ का एक उदाहरण है।

   (v) आय __________ की __________ पर अधिकता है।

2. निश्चित कीजिए कि निम्नलिखित लेन-देनों का परिणाम व्यवसाय के लिए आगम है या व्यय:

   (i) 30,000 रोकड़ पर माल का विक्रय

   (ii) 50,000 रू. का उधार पर माल को बेचा।

   (iii) माह का 2,500 रू. वेतन दिया।

   (iv) बैंक ने 1,000 रू. का ब्याज दिया।

   (v) विक्रयकर्त्ता को 2,000 रू. का कमीशन दिया।

3.4 उपार्जन संकल्पना

उपार्जन का अर्थ हैं "कुछ चीज जो बकाया हैं विशेषतया मुद्रा की वह रकम जिसका लेखाकंन अवधि के अन्त में भुगतान करना बाकी हैं या जो प्राप्त करनी हैं।"

लेखाकंन में उपार्जन संकल्पना के अन्तर्गत आगम को माल या सेवाओं की बिक्री पर वसूल/अर्जित माना जाता हैं न कि जब रोकड़ प्राप्त होता हैं। उदाहरण के रूप में, अमृत ने दिसम्बर 1996 में अखिल को 25,000 रू. के मूल्य का माल तीन महीने के उधार पर बेचा। अब यदि अमृत वर्ष के अन्त 31 दिसम्बर 1996 को अपनी आय का निर्धारण करना चाहता हैं तो वह 25,000 रू. की अखिल को माल की बिक्री को वर्ष 1996 के आगम मानेगा। तीन महीने बाद जब अखिल 25,000 रू. देगा तो इसका लेखा मात्र देनदार से वसूली के रूप में होगा न कि एक आगम लेन-देन के रूप में। इसी प्रकार व्ययों की पहचान सेवाओं की प्राप्ति के समय की जाती हैं न कि जब इन सेवाओं का वास्तविक भुगतान किया जाता हैं। उदाहरण के रूप में, दिसम्बर 1996 के माह के वेतन की रकम 10,000 रू. का भुगतान जनवरी 1997 में किया। इसका लेखा वर्ष के अन्त 31 दिसम्बर 1996 की आय निर्धारण में एक व्यय के रूप में किया जायेगा।

खर्चे किये – भुगतान किया और अभी करना है :

उपार्जन संकल्पना के अनुसार, एक अवधि के दौरान किये खर्चों पर विचार किया जाता हैं चाहे अवधि के अन्त तक भुगतान किया जा चुका हो या किया जाना हो। आईये हम निम्नलिखित उदाहरणों का अध्ययन करें :

(i) दिसम्बर 1996 के माह का 5,000 रू. वेतन का जन. 1997 में भुगतान किया।

(ii) जनवरी 1997 की दिसम्बर 1996 के माह के किराये का 2,000 रू. भुगतान किया।

(iiii) दिसम्बर 1996 की 1,000 रू. की मजदूरी का दिसम्बर 1996 में भुगतान किया।

उपरोक्त प्रत्येक उदाहरण में, क्या आप दिसम्बर, 31,1996 को भुगतान किये जाने वाली रकम को ज्ञात कर सकते हैं? ये है :

(i) 5,000 रू.

(ii) 3,000 रू.

(iii) शून्य।

उपरोक्त उदाहरणो से यह स्पष्ट हैं कि व्यय जो देय हैं और जिनका लेखाकंन अवधि के अन्त में भुगतान करना हो, उन्हें उसी अवधि के व्यय के रूप में लिखा जाना चाहिए। दिस. 1996 के वेतन तथा किराये का भुगतान जनवरी 1997 में किया गया लेकिन उपार्जन संकल्पना के अनुसार इन्हें वर्ष अन्त 31 दिसम्बर 1996 के व्यय माना गया हैं क्योकि इन व्ययों का भुगतान दिसम्बर 1996 में देय हो गया था। हम सभी व्ययों को उस वर्ष में जब वे (भुगतान के लिए) देय हो जाते हैं व्यय मानते हैं चाहे उनका भुगतान किया जा चुका हो या नहीं।

आगम-प्राप्त किये और अभी प्राप्त करने है :

उपार्जन संकल्पना बताती हैं कि आगम माल या सेवाओं के विक्रय की समयावधि में वसूल माने जाते हैं चाहे वे रोकड़ में प्राप्त किये जा चुके हों या उस समयावधि के अन्त तक प्राप्त किये जाने हों।

आईये हम निम्नलिखित उदाहरणों का अध्ययन करे।

(i) एक व्यवसाय ने अपने भवन का एक भाग एक अन्य व्यापारी को 1,000 रू. प्रति माह किराये पर दिया है। दिसम्बर 1996 माह का किराया जनवरी 1997 में प्राप्त हुआ।

(ii) दिसम्बर 1997 का 500 रू. कमीशन दिसम्बर 1997 में प्राप्त हुआ।

(iii) दिसम्बर 1996 में 10,000 रू. रोकड़ पर तथा 5,000 रू. तीन महीने की उधार पर माल बेचा।

उपरोक्त प्रत्येक उदाहरण से स्पष्ट हैं कि एक अवधि में अर्जित आगम को उसी अवधि के आगम के रूप में लिखा जाना चाहिए चाहे उस अवधि के अन्त तक वे प्राप्त किये गये हों या प्राप्त किये जाने हों। वर्ष 1996 के आय निर्धारण के लिए उस वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर. 1996 को किराये और उधार माल के विक्रय से अर्जित आगमों का उस वर्ष के आगम माना जायेगा चाहे वे रोकड़ में 1997 में प्राप्त हुए हो।

आगम और व्यय का पूँजी पर प्रभाव

आईये हम एक उदाहरण लेते हैं, अतुल 10,000 रू. का माल बेचता है। उसके माल को बेचने के व्यय (माल की लागत समेत) 8,000 रू. हैं। उसकी व्यवसाय में पूँजी 50,000 रू. हैं। अब, 10,000 रू. का माल बेचकर वह 10,000 रू. के आगम प्राप्त करता हैं और इसलिए उसकी पूँजी 10,000 रू. से बढ़ जायेगी और 60,000 रू. हो जायेगी। उसी समय, वह उपरोक्त आगम प्राप्ति के लिए 8,000 रू. का व्यय (माल की लागत समेत) करता हैं अतः उसकी पूँजी व्यय की रकम अर्थात् 8,000 रू. से कम हो जायेगी और अब उसकी पूँजी 52,000 रू. हो जायेगी। अन्य शब्दों में, आगम पूँजी में वृद्धि करते हैं और व्यय इसमें कमी करते हैं।

अतः लेखाकंन की उपार्जन संकल्पना बताती है :

(i) आगम माल और सेवाओं के विक्रय पर अर्जित होते हैं न कि जब रोकड़ प्राप्त होती है।

(ii) आगम उत्पादन में सेवाओं की प्राप्ति और उपयोग के समय व्ययों की पहचान होती हैं न कि उनके भुगतान करने पर।

(iii) आगम स्वामी की पूँजी में वृद्धि करते हैं जबकि व्यय इसमें कमी करते हैं।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरिये :

   (i) उपार्जन संकल्पना __________ निर्धारण से सम्बन्धित हैं।

   (ii) आगम पूंजी में __________ करते हैं।

   (iii) स्वामी की पूंजी __________ द्वारा कम होती हैं।

   (iv) आगम का व्यय पर अधिकय __________ कहलाता है।

   (v) हानि __________ की __________ पर अधिकता है।

2. निम्नलिखित लेन-देन अजय के वर्ष 1996 तथा 1997 के हैं। उसका लेखाकंन वर्ष प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को समाप्त होता है। प्रत्येक लेन-देन के सामने वर्ष लिखिए तथा बताइये कि वे आगम या व्यय मानी जायें।

   (i) Goods sold for Rs.25,000 in April 1996 ( )

   (ii) Commission paid Rs.2,000 in Jan. 1997 for the sale in November 1996 ( )

   (iii) Rent paid Rs.2,500 in Dec. 1996 as an advance for Jan. 1997 ( )

   (iv) Interest of Rs. 600 became due for 1996 but paid by the bank in April 1997 ( )

   (v) Repair charges of Rs.1,200 paid on goods sold in 1996 as per sales agreement ( )

3.5 (आय) वसूली की संकल्पना

यह संकल्पना बताती है कि लेखा बहियों में आगम का लेखा कब किया जाना चाहिए। यह बताती हैं कि आगम तब लिखे जाने चाहिये जब वे वसूल किये गये हों। आगम को तब प्राप्त मना जाना चाहिए जब माल या सेवाओं या दोनों के विक्रय पर रोकड़ प्राप्त हो जाये या रोकड़ प्राप्ति के अधिकार प्राप्त हो जायें।

आईये हम निम्नलिखित उदाहरणों का अध्ययन करते हैं :

(i) वी.के. ज्वैलर्स को 1,00,000 रू. मूल्य के जेवरात पूर्ति का आदेश प्राप्त हुआ। वे वर्ष के अन्त 31 दिस. 1996 तक 20,000 रू. मूल्य के जेवरात की पूर्ति कर पाये तथा

शेष जेवरात वर्ष 1997 में दिये गये।

(ii) रेखा ने 50,000 रु. रोकड़ का माल 1996 में बेचा और उसी वर्ष माल की समुर्दगी भी दे दी।

(ii) विक्रम ने वर्ष 1996 (जो 31 दिस. को समाप्त होता था) के दौरान 25,000 रू. का माल उधार बेचा, माल की सुपुर्दगी 1996 में दी गई लेकिन भुगतान मार्च, 1997 में प्राप्त हुआ।

अब आप 31 दिसम्बर 1996 को समाप्त हो रहे वर्ष में वसूल आगम की सही रकम ज्ञात करने के लिए उपरोक्त उदाहरणों का विश्लेषण कर सकते हैं।

(i) वी.के.ज्वलैर्स के वर्ष 1996 के आगम 20,000 रू. हैं क्योकि मात्र आदेश प्राप्ति को आगम नही समझा जायेगा जब तक कि माल की सुपुर्दगी न दे दी गई हो।

(ii) रेखा के 1996 के आगम 50,000 रू. हैं क्योकि माल की सुपुर्दगी 1996 में कर दी गई तथा रोकड़ भी उसी वर्ष प्राप्त किये जा चुके हैं।

(iii) विक्रम के वर्ष 1996 के आगम 25,000 रू. है क्योकि ग्राहक को माल की सुपुर्दगी 1996 में दी गई तथा आगम 1996 में देय हुए जबकि प्राप्त 1997 में हुए।

आय वसूली संकल्पना के अनुसार, आगम केवल वसूली पर लिखे जाये, पहले नहीं। वसूली से अभिप्रायः केवल रोकड़ में ही वसूली से नही हैं बल्कि इससे अभिप्रायः प्राप्यों के रूप में सम्पत्तियों के अन्तः प्रवाह से भी हैं।

उपरोक्त उदाहरणों में, आगम तब वसूल हुये माने जाते हैं जब माल की सुपुर्दगी ग्राहकों को की जाती है। वसूली संकल्पना बताती है कि जब माल की वास्तविक सुपुर्दगी दी जाती हैं या सेवाएँ प्रदान की जाती हैं आगम उस समय वसूल हुऐ माने जाते हैं।

इस संकल्पना का महत्त्व हैं कि यह लेखाकंन सूचनाओं को अधिक वस्तुनिष्ठ बनाने में सहायता करती है। यह मार्गदर्शन करती है कि लेन-देनों का लेखा निष्पादन पर आधारित हो न कि वायदे पर। अतः वसूली संकल्पना आगम का लेखाकंन अवधियों से सम्बन्धन में सहायक हैं।

पाठगत प्रश्न 3.3

31 दिसम्बर 1996 को समाप्त हो रहे वर्ष के सही आगम वसूल रकम को निश्चित कीजिएः-

(i) 2,00,000 रू. के माल पूर्ति का एक आदेश 1996 में प्राप्त हुआ। 1996 में मात्र 1,50,000 के माल की पूर्ति की गई।

(ii) उपरोक्त (i) में आगम क्या होगें यदि 1,00,000 रू. का रोकड़ भुगतान 1996 में प्राप्त हो तथा शेष 50,000 रू. का 1997 में प्राप्त हो।

(iii) उपरोक्त (i) में आगम क्या होगें यदि माल उधार बेचा गया हो और 1,50,000 रू. का भुगतान 1997 में प्राप्त हो जबकि सम्पूर्ण माल (2,00,000 रू. के) की पूर्ति 1996 में की गई हो।

(iv) उपरोक्त (i) में आगम क्या होगें यदि 50,000 रू. का अग्रित भुगतान 1996 में प्राप्त हुआ हो तथा शेष 1997 में प्राप्त हुआ हो।

3.6 द्वि-पहलु संकल्पना

द्वि का अर्थ 'दो' हैं। यह संकल्पना बताती हैं कि लेखाकंन में प्रत्येक लेन-देन के दो पहलू (या पक्ष) होते हैं। उदाहरण के लिए, लेन-देन "रोकड़ पर माल क्रय" में दो पहलू "रोकड़ देना" और "माल प्राप्त करना" हैं। इसी प्रकार, लेखाकंन में प्रत्येक लेन-देन के दो पहलू (या पक्ष) होते हैं।

आईये हम कुछ और व्यावसायिक लेन-देनों का उनके दो पहलूओं के रूप में विश्लेषण करें:-

1. रोकड़ पर मशीनरी क्रय की।

   इस लेन-देन के दो पहलू हैं-

   (i) रोकड़ भुगतान

   (ii) मशीनरी प्राप्ति।

2. रोकड़ पर माल का विक्रय।

   दो पहलू हैं-

   (i) रोकड़ प्राप्ति

   (ii) माल की सुपुर्दगी

3. स्वामी व्यवसाय में रोकड़ लाता हैं।

   यह स्वामी व व्यवसाय के मध्य एक लेन-देन है। दो पहलू हैं-

   (i) रोकड़ प्राप्ति

   (ii) स्वामी की पूँजी

4. कृष्णा को उधार माल का विक्रय।

   दो पहलू हैं-

   (i) माल की सुपुर्दगी

(ii) कृष्णा – उससे पैसा देय है (लेखाकंन भाषा में ऐसा व्यक्ति देनदार कहलाता हैं।)

5. रामा से उधार फर्नीचर खरीदा।

इस लेन-देन के दो पहलू हैं –

(i) फर्नीचर प्राप्ति

(ii) रामा – उसको पैसा देय हैं (लेखाकंन भाषा में ऐसा व्यक्ति लेनदार कहलाता है।)

6. मकान मालिक को रोकड़ में किराये का भुगतान।

दो पहलू हैं –

(i) रोकड़ भुगतान

(ii) किराया – एक व्यय

7. रोकड़ में कमीशन प्राप्त।

इस लेन-देन के दो पहलू हैं-

(i) रोकड़ प्राप्ति

(ii) कमीशन – आगम

द्वि-पहलू संकल्पना का ज्ञान लेन-देन के दो पहलूओं (या पक्षों) की पहचान में सहायता करता है। जब एक लेन-देन के दोनों पहलू ज्ञात हो जाते हैं तब नियमों को लागू करना आसान हो जाता है और लेखा बहियों में अभिलेख रखना भी। द्वि-पहलू संकल्पना का परिणाम यह है कि प्रत्येक लेन-देन का सम्पत्तियों तथा देयताओं पर समान प्रभाव इस प्रकार होता हैं कि कुल सम्पत्तियाँ सदैव कुल देयताओं के बराबर रहती हैं।

सम्पत्तियाँ = देयता

पाठगत प्रश्न 3.4

निम्नलिखित लेन-देनों के दो पहलूओं (प्रभावों) को लिखिए :

क्रम स.	लेन-देन	प्रथम पहलू	द्वितीय पहलू
(i)	स्वामी व्यवसाय में पूँजी लाता है।		
(ii)	रोकड़ पर माल खरीदा।		

(iii) रोकड़ पर माल बेचा।

(iv) रोकड़ पर फर्नीचर खरीदा।

(v) शर्मा (देनदार) से रोकड़ प्राप्त किया।

(vi) राजा से उधार मशीनरी खरीदी।

(vii) राहुल को भुगतान किया।

(viii) वेतन दिया।

3.7 आपने क्या सीखा।

1. लेखाकंन सकल्पनाएँ व्यवसायिक लेन-देनों के लेखन के लिए सार्वभौमिक स्वीकृत नियम हैं।

2. माल को बेचने तथा सेवाओं को प्रदान करने पर सम्पत्तियों के अन्तःप्रवाहों जैसे रोकड़ तथा प्राप्यों की प्राप्ति के स्रोतों का अर्थ आगम है।

3. एक निश्चित अवधि में आगम सृजन के लिए रोकड़ या सम्पत्तियों के प्रयोग के बाह्यप्रवाहों को व्यय कहते हैं।

4. आगम की व्यय पर अधिकता लाभ या आय कहलाती है।

5. व्यय की आगम पर अधिकता हानि कहलाती है।

6. अनुरूपता संकल्पना के अन्तर्गत, एक अवधि के व्ययों को उसी अवधि के आगमों से, उचित आय निर्धारण के लिए, मिलाया जाता है।

7. उपार्जन संकल्पना मानती है कि आगम उस समय वसूल होते हैं जब माल या सेवाएँ बेची जाती हैं न कि जब रोकड़ प्राप्त होती हैं।

8. उपार्जन संकल्पना यह भी मानती हैं कि व्ययों की पहचान उस समय की जाती हैं जब आगम सृजन के लिए सेवाओं को प्राप्त और प्रयोग किया जाता हैं न कि जब भुगतान किया जाता है।

9. आगम पूँजी में वृद्धि करते हैं और व्यय इसमें कमी करते हैं।

10. वसूली संकल्पना के अनुसार, आगम वसूल होते हैं जब रोकड़ प्राप्त होता हैं या रोकड़ प्राप्ति का अधिकार स्थापित हो जाता हैं।

11. लेखांकन में प्रत्येक लेन-देन के दो पहलू होते हैं।

12. द्वि-पहलू संकल्पना के अनुसार, प्रत्येक लेन-देन का सम्पत्तियों तथा देयताओं पर समान प्रभाव इस प्रकार होता है कि कुल सम्पत्तियाँ सदैव कुल देयताओं के बराबर रहती हैं।

3.8 पाठान्त प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :

   (क) अनुरूपता संकल्पना में किसे किससे मिलाया जाता है?

   (ख) उस संकल्पना का नाम बताईये जो यह बताती है कि प्रत्येक बाद के लेन-देन पर सम्पत्तियों और देयताओं के योग समान रहते है।

   (ग) वसूली संकल्पना में आगम कब वसूल होते हैं?

2. आगम तथा व्यय शब्दों की उदाहरण देकर लगभग 50 शब्दों में व्याख्या कीजिए।

3. अनुरूपता संकल्पना का अर्थ बताईये तथा इसके महत्त्व की लगभग 50 शब्दों में व्याख्या कीजिए।

4. लेखाकंन में उपार्जन संकल्पना का अर्थ उदाहरणों सहित लगभग 50 शब्दों में बताईये।

5. एक उचित उदाहरण के साथ वसूली संकल्पना का अर्थ लगभग 50 शब्दों मे बताईये।

6. द्वि-पहलू संकल्पना के अर्थ व महत्त्व की उदाहरणों सहित व्याख्या कीजिए (लगभग 50 शब्दों में)।

7. मैसर्स कृष्णा सूती मिल के निम्नलिखित लेन-देन हैं। बताईये कि ये आगम से सम्बन्धित हैं या व्यय से सम्बन्धित हैं या न तो आगम और न व्यय से सम्बन्धित हैं।

(i)	Introduced capital in the business	4,00,000
(ii)	Bought raw cotton for cash	1,00,000
(iii)	Sold cloth for cash	3,00,000
(iv)	Machinery purchased from M/s Gupta & Co.	2,00,000
(v)	Salaries paid to workers	3,000
(vi)	Bought furniture for office use	10,000
(vii)	Land purchased for cash	2,00,000
(viii)	Sales to M/s Khanna & Co. on credit	4,00,000

(ix)	Cash received from M/s Khanna & Co.	3,00,000
(x)	Rent received	5,000
(xi)	Bank paid interest on our deposits	3,000
(xii)	Wages paid to workers	1,000
(xiii)	Loan taken from bank	3,00,000
(xiv)	Commission received	

3.9 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 (i) आगम (ii) सम्पत्तियां (iii) आगम

(iv) व्यय (v) आगम, व्यय

2. आगम - (i), (ii), (iv)

व्यय - (iii), (v)

3.2 (i) आय

(ii) वृद्धि

(iii) व्यय

(iv) आय/लाभ

(v) व्यय, आगम

2. (i) 1996 (आगम) (ii) 1996 (व्यय) (iii) 1997 (व्यय)

(iv) 1996 (आगम) (v) 1996 (व्यय)

3.3 (i) 1,50,000 रू.

(ii) 1,50,000 रू.

(iiii) 2,00,000 रू.

(iv) 1,50,000 रू.

3.4 (i) स्वामी की पूँजी, रोकड़

(ii) माल प्राप्ति, रोकड़

(iii) रोकड़ प्राप्ति, माल का विक्रय

(iv) फर्नीचर, रोकड़

(v) रोकड़, शर्मा

(vi) मशीनरी, राजा

(vii) रोकड़, राहुल

(viii) वेतन, रोकड़।